समावर्तन

२००६

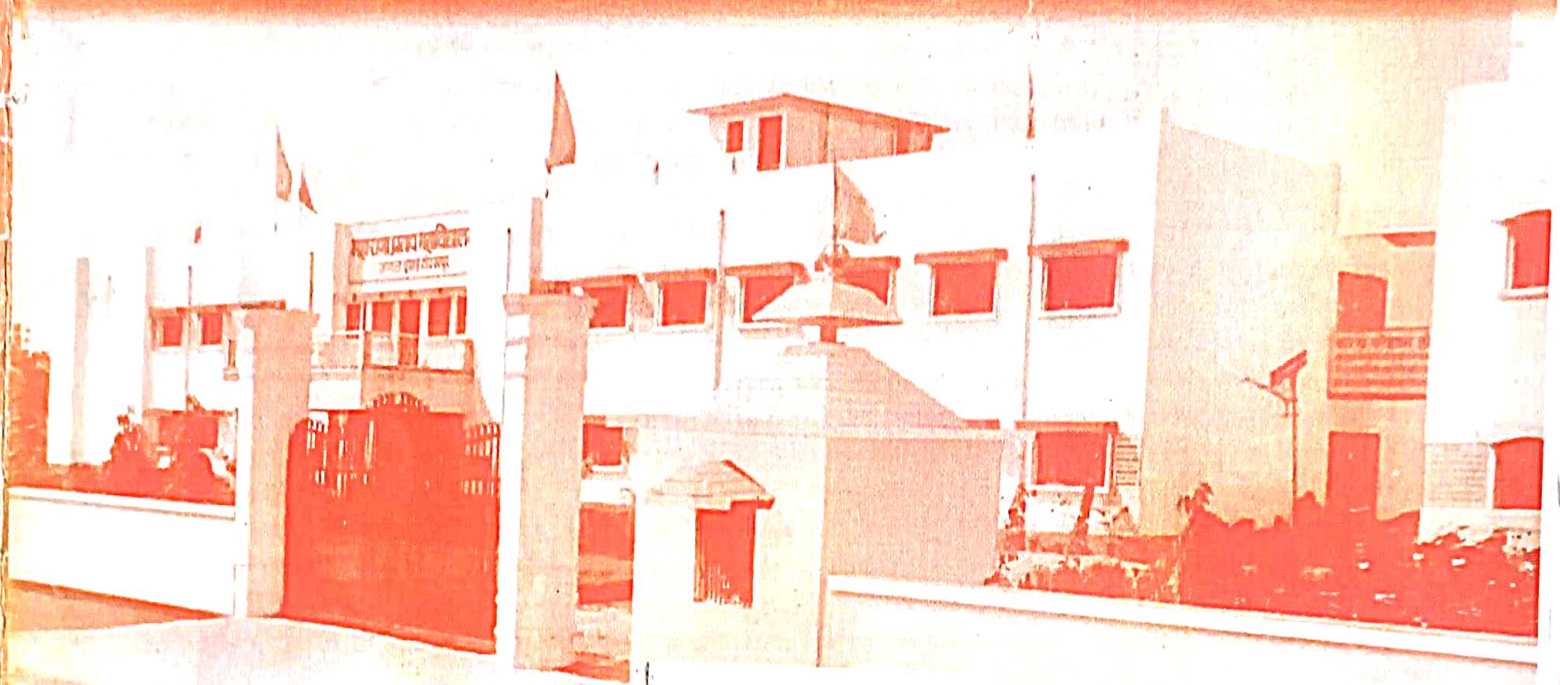

MPM LIBRARY 102/01

2584

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

जंगल धूसड़ - गोरखपुर

मेरे दो शब्द ...

गोरक्षपीठ द्वारा संचालित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् जैसे वट वृक्ष की एक छोटी सी शाखा के रूप में महानगर के पूर्वी - उत्तरी छोर पर ग्रामीण परिवेश में महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ अपनी यात्रा के चार वर्ष पूर्ण कर रहा है। महाविद्यालय का दूसरा बैच इस वर्ष विश्वविद्यालय की परीक्षा उत्तीर्ण कर जाने हेतु तैयार है। किसी भी शैक्षिक संस्था के विकास में चार वर्ष का समय बहुत अधिक तो नहीं होता किन्तु यह समय बहुत कम भी नहीं है। किसी [illegible] संस्था का अपने शुरूआत के वर्षों में ही उस[illegible] स्वरूप और प्रभाव स्पष्ट होने लगता है। महाराणा प्रताप महाविद्यालय के प्राचार्य के रूप में कार्य करते हुए [illegible] रहा है कि यह मेरा सौभाग्य है, जो ऐसे महाविद्यालय के विकास में किंचित योगदान करने का अवसर [illegible] ने प्रदान किया। मुझे अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में सर्वाधिक आत्म-सन्तुष्टि यहाँ कार्य करते हुए प्राप्त हुई । आज जब कि उपभोक्तावादी संस्कृति में व्यावसायिकता समाज के सर चढ़कर बोल रही है। अधिकांश सरकारी-गैर सरकारी संस्थाएँ आर्थिक लाभ के सिद्धान्त पर कार्य कर रही हैं, एक ऐसे महाविद्यालय में का[illegible] करने का अवसर पाकर कौन अपने को सौभाग्यशाली नहीं समझेगा, जि[illegible]की स्थापना एवं जिसका विकास आर्थिक लाभ-हानि से इतर 'सामाजिक सहभाग' के लिए किया जा रहा हो। गोरक्षपीठ द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये गये कार्यों से मैं परिचित तो था किन्तु इसकी प्रत्यक्ष अनुभूति महाराणा प्रताप महाविद्यालय की विकास यात्रा में अकिंचन सहयोगी बनकर हुई।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय का भव्य भवन और विशाल परिसर जब हमें मिला तो मानो मन माँगी मुराद मिल गई। ल[illegible] दशक तक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ता के रूप में शिक्षा क्षेत्र में [illegible] जो कुछ सोचा करता था, बोला करता था, उसे [illegible] लागू करने का अवसर मिला। दो बातें साफ थीं - महाविद्यालय को शिक्षक और छात्र सहभाग से चलाना और [illegible] प्रतिमान शिक्षण संस्था का विक[illegible]ना। महाविद्यालय के प्र[illegible] पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज का इस दिशा में मार्गदर्शन और सहयोग अविस्मरणीय है। उनसे हमें एवं हमारी टीम को बराबर उत्साह मिलता रहता है। महाविद्यालय को चार चरणों में विकसित करने का कार्य प्रारम्भ हुआ। प्रथम - महाविद्यालय प्राचार्य चलायें, द्वितीय-महाविद्यालय शिक्षक चलायें, तृतीय चरण -महाविद्यालय छात्र चलायें और चौथा चरण कि महाविद्यालय स्वत: स्फूर्त चलता रहे। मुझे यह कहते हुए अति प्रसन्नता हो रही है कि हम दूसरा चरण पार कर चुके हैं। महाविद्यालय प्राध्यापक चला रहे हैं। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण और ताजा उदाहरण 'समावर्तन' संस्कार समारोह का आयोजन है। गत वर्ष अति व्यस्तता के कारण ऐसे किसी आयोजन की योजना फिलहाल मेरे मन में न आ सकी। छात्र-छात्राओं द्वारा 'विदाई' कार्यक्रम से प्रारम्भ चर्चा प्राध्यापकों तक आते-आते 'समावर्तन' का रूप धारण कर ली। महत्त्वपूर्ण है कि इस आयोजन का नाम 'समावर्तन' (भारतीय संस्कृति के षोडश संस्कारों में एक संस्कार 'समावर्तन' है) भी प्राध्यापकों ने सुझाया, इस कार्यक्रम की रूपरेखा सब कुछ महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने तैयार की। उसी श्रृंखला में इस वर्ष दूसरा 'समावर्तन' संस्कार समारोह आयोजित किया जा रहा है।

मुझे यह कहने में भी कोई संकोच नहीं है कि महाविद्यालय में 'प्राचार्य' के नाते 'हस्ताक्षर' छोड़ दिया जाय तो महाविद्यालय को प्राध्यापकों ने चलाया है। छात्रों का प्रशासन में सहभाग की दिशा में भी प्रगति हुई है। छात्र-छात्राओं की प्रवेश समिति तो दूसरे वर्ष से ही कार्य कर रही है। गत सत्र से नियन्ता मण्डल, कार्यक्रम विभाग, खेल, पुस्तकालय, प्रयोगशाला आदि समितियों में बतौर सदस्य छात्र संघ के पदाधिकारी अथवा प्रतिनिधि होते हैं। यद्यपि उनकी सक्रियता अभी तक सन्तोष जनक नहीं है। तथापि हमें विश्वास है कि आगामी दो-तीन वर्षों में छात्र-छात्राओं की सक्रिय भूमिका महाविद्यालय के संचालन में हो जायेगी। अपनी क्षमता और सोच के अनुसार हमारी टीम (प्राध्यापक, कर्मचारी एवं अनुचर) ने महाविद्यालय में एक अलग तरह का शैक्षिक परिसर निर्माण किया है। महाविद्यालय को प्रतिमान शैक्षिक संस्थान बनाने की दिशा में सभी अपनी-अपनी क्षमतानुसार पूर्ण मनोयोग एवं पारिवारिक भाव के साथ कार्य कर रहे हैं।

यद्यपि विकास एक अनवरत प्रक्रिया है और यह नहीं कहा जा सकता कि किसी संस्था का पूर्ण विकास हो गया। जहाँ भी पहुँचे हैं, वहाँ से आगे बढ़ना ही विकास प्रक्रिया का अपरिहार्य हिस्सा है। तथापि हमने अब तक जो प्रयास किया है, उसमें कहाँ त्रुटि रह गयी ? और भी क्या हो सकता है! यह निरपेक्ष मूल्यांकनकर्ता ही बता सकता है। महाविद्यालय परिवार अपने शुभचिन्तकों के ऐसे सभी सुझावों का स्वागत करता है। हम निरन्तरता में विश्वास रखते हैं, आगे बढ़ते रहने और चलते रहने में विश्वास रखते हैं, हम निरंतर सुधार के पक्षधर हैं। आप सभी का सुझाव महाविद्यालय परिवार के लिए आशीर्वाद के समान है। मुझे विश्वास है कि गोरक्षपीठ द्वारा स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित जंगल धूसड़ स्थित महाराणा प्रताप महाविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जिस प्रकार एक प्रतिमान संस्थान बनकर उभरा है, आप सबके सहयोग एवं आशीर्वाद से अपने प्रगति पथ पर निरन्तर अग्रसर रहेगा तथा महाविद्यालय से स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त कर अपने जीवन के अगले सोपान पर कदम रखने वाले विद्यार्थी देश के एक योग्य नागरिक के रूप में यशस्वी होंगे।

तिथि - फाल्गुन कृ० १४, महाशिवरात्रि २००९

प्रदीप राव

(डॉ. प्रदीप राव)
प्राचार्य

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

॥ ओ३म् नमो भगवते गोरक्षनाथाय ॥

श्री गोरखनाथ मन्दिर ☎ (0551) 2255453 2255454

Dr. BHOLENDRA SINGH
M.Com. Ph.D.
Ex. - Vice Chancellor
Poorvanchal University
Jaunpur

☎ : (051) - 2256934
Residence :-
A-64, Surajkund Colony
Gorakhpur-273001

गोरक्षपीठाधीश्वर

2584

शुभाशीष

1932 में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना गुरूदेव महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने पूर्वी उत्तर [illegible] शिक्षा के प्रसार हेतु किया था । उन्होंने अपने द्वारा स्थापित 'महाराणा प्रताप महाविद्यालय' को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पन्त के आग्रह पर गोरखपुर विश्वविद्यालय के स्थापना हेतु भूमि-भवन एवं अध्यापक-छात्र सहित पूरा महाविद्यालय सरकार को दे दिया। सम्प्रति गोरखपुर विश्वविद्यालय की नींव पड़ी। उसी स्मृति को पुनर्जिवित करते हुए जंगल धूसड़ में 'महाराणा प्रताप महाविद्यालय' की स्थापना की गई।

यह महाविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिमान बन कर उभरा है। हमें प्रसन्नता है कि महाविद्यालय का द्वितीय बैच स्नातक की शिक्षा पूरी कर अपने जीवन के अगले सोपान पर कदम रखने के लिए तैयार है। 'समावर्तन संस्कार' के साथ उन्हें महाविद्यालय परिवार 'विदा' करने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि महाराणा [illegible] महाविद्यालय में अध्ययन के दौरान यहाँ के विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के साथ-साथ जो सामाजिक-राष्ट्रीय जीवन की भी शिक्षा एवं प्रेरणा मिली है , उससे उनका मार्ग प्रशस्त होगा । राष्ट्र और समाज को एक योग्य पीढ़ी प्राप्त होगी । मेरा सभी छात्र-छात्राओं को शुभाशीष एवं इस आयोजन के प्रति हार्दिक शुभकामना ।

शुभेच्छु :

(महन्त अवेद्यनाथ)
अध्यक्ष- प्रबन्ध समिति
महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़

शुभकामना संदेश

गोरक्षपीठ की शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में पहल अविस्मरणीय है। 1932 में ही महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना [illegible] साथ शिक्षण संस्थानों की जो श्रृंखला खड़ी हुई, उसमें महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ की स्थापना उच्च शिक्षा में बढ़ते कदम का अगला पड़ाव था । गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की इच्छा एवं प्रेरणा से स्थापित यह महाविद्यालय चार वर्ष पूरा करने जा रहा है। इस सत्र में महाविद्यालय से स्नातक शिक्षा प्राप्त कर चुके दूसरे 'बैच' के लिए 'समावर्तन संस्कार' समारोह का आयोजन एक प्रसंशनीय प्रयास है। इस प्रयास की सफलता हेतु मैं महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामना एवं धन्यवाद प्रेषित कर रहा हूँ ।

(डा० भोलेन्द्र सिंह)
पूर्व कुलपति
अध्यक्ष- महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर

समावर्तन

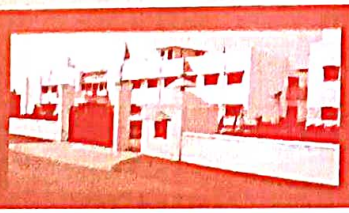

योगी आदित्यनाथ
सांसद (लोकसभा)
भारत

शुभकामना संदेश

शिक्षा में गुणवत्ता का गिरता स्तर उच्च शिक्षा के समक्ष एक बड़ी चुनौती है। उच्च शिक्षा परिसरों में अराजकता, अपराधियों का बढ़ता प्रभाव, राजनीतिक दलों का सक्रिय हस्तक्षेप और शिक्षा संस्कृति का निरन्तर ह्रास गम्भीर चिन्ता का विषय है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में गुणवत्तायुक्त, युगानुकूल और भारतीय संस्कृति केन्द्रित शिक्षा के प्रसार हेतु महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने की थी। उपरोक्त विषम परिस्थितियों में चुनौती को स्वीकार करते हुए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना 2005 में की गयी । शीघ्र ही इस महाविद्यालय ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करायी। पूरे सत्र में 145 दिन कार्य दिवस, 25 जनवरी तक पाठ्यक्रम पूर्ण कर लेने, सप्ताह में एक दिन की कक्षा छात्र-छात्राओं द्वारा पढ़ाये जाने, प्रार्थना एवं राष्ट्रगीत के साथ महाविद्यालय की प्रतिदिन की दिनचर्या शुरू करने, विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा का आयोजन जैसे अनेक नये-नये प्रयोगों के साथ इस महाविद्यालय ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनुकरणीय ख्याति अर्जित की है।

छात्रसंघ की संरचना में नया प्रयोग एवं प्रशासनिक व्यवस्था में छात्र सहभाग की योजना प्रशंसनीय है। यदि यह प्रयोग सफल हुआ तो निश्चित ही यह महाविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक मानक महाविद्यालय के रूप में जाना जायेगा। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षा के साथ संस्कार का प्रयास भी सराहनीय है। 'समावर्तन' संस्कार समारोह का आयोजन भी भारतीय संस्कृति की शिक्षा परिसर में पुनर्स्थापना का एक प्रयास है। महाविद्यालय द्वारा आयोजित समावर्तन संस्कार यदि दीक्षांत की रूढ़ और परम्परागत खानापूर्ति से अलग सिद्ध हुआ तो निश्चित ही यह प्रयास भी प्रशंसनीय होगा। 'समावर्तन' संस्कार समारोह के सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामना।

भवदीय

(योगी आदित्यनाथ)
प्रबन्धक-महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगलधूसड़, गोरखपुर

प्रो० यू० पी० सिंह
पूर्व कुलपति
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय
जौनपुर, उ. प्र.

शुभकामना संदेश

गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर ब्रह्मलीन पूज्य महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने 1932 में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की । शिक्षा के प्रसार को लोक जागरण और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का सशक्त माध्यम स्वीकार करते हुए ब्रह्मलीन दिग्विजयनाथ जी महाराज ने शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े पूर्वी उत्तर प्रदेश में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत प्राथमिक से लेकर उच्च एवं प्राविधिक शिक्षण संस्थानों की श्रृंखला खड़ी की । तत्पश्चात् गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की देख रेख में शिक्षा के क्षेत्र में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत शिक्षण संस्थानों की स्थापना एवं विकास का कार्य निरन्तर जारी है। सौभाग्य से मुझे भी महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा स्थापित तत्कालीन महाराणा प्रताप डिग्री कालेज में 1955 से 1958 तक कार्य करने का सुअवसर मिला। महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ की स्थापना शिक्षा परिषद् के इसी बढ़ते क्रम में हुई । अपने अल्प समय में ही उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इस महाविद्यालय को पर्याप्त यश मिला है। नित नये प्रयोगों, अनुशासन, गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने के कारण यह महाविद्यालय प्रशंसित हुआ है। हमें विश्वास है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु महाराणा प्रताप महाविद्यालय भारतीय संस्कृति के विकास का प्रयास जारी रखेगा । महाविद्यालय के द्वितीय 'समावर्तन' संस्कार समारोह के आयोजन पर महाविद्यालय परिवार को हमारी हार्दिक शुभकामना ।

(प्रो. यू. पी. सिंह)
पूर्व कुलपति
उपाध्यक्ष-महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगलधूसड़, गोरखपुर

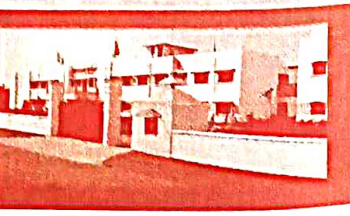

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

प्रो. राम अचल सिंह
पूर्व कुलपति
रा. म. लो. विश्वविद्यालय, फैजाबाद
पूर्व अध्यक्ष
उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, उ. प्र.

शुभकामना संदेश

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् गोरखपुर, जनपद गोरखपुर व उसके पास के जनपदों में गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्यनीय अवेद्यनाथ जी व उनके उत्तराधिकारी पूज्यनीय योगी आदित्यनाथ जी के कुशल मार्गदर्शन के अन्तर्गत लगभग दो दर्जन शिक्षण संस्थाओं का संचालन कर रही है। परिषद् ने महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ की स्थापना चार वर्ष पूर्व किया है। इस वर्ष महाविद्यालय का दूसरा बैच स्नातक तृतीय वर्ष की परीक्षा में सम्मिलित होने जा रहा है।

महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेते हुए महाविद्यालय में शिक्षण कार्य एवं शिक्षणेत्तर कार्य सम्पादित हो रहा है। महाविद्यालय में पढ़ने वाले बालक व बालिकाओं को यहाँ की मिट्टी व जमीन से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। छात्र-छात्राओं को भारत के इतिहास, संस्कृति, राष्ट्रीय गौरव व राष्ट्रीय स्वाभिमान से जोड़ने के लिए महाविद्यालय हमेशा प्रयत्नशील दिखाई देता है। विषय ज्ञान के साथ ही राष्ट्र के प्रति समर्पण व सामाजिक समरसता का पाठ भी विद्यार्थियों को पढ़ाया जा रहा है। महाविद्यालय ऐसे नागरिक तैयार कर रहा है जो अपने राष्ट्र को जानें व समझें। अपने राष्ट्र व वतन के लिए जीने की प्रेरणा ग्रहण करें।

परिषद् स्थापना काल से ही ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी की प्रेरणा से शीलवान नागरिकों का निर्माण कर रही है। शीलवान मनुष्य से अधिक मूल्यवान कोई चीज है ही नहीं। शील भ्रष्ट मनुष्य केवल पाप ही नहीं करता है अपितु पापियों का पालन पोषण भी करता है। शील विहीन मनुष्य पशु बन जाता है और मनुष्य का पशु बन जाना ही उसकी मृत्यु है।

समावर्तन समारोह के अवसर पर मैं महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों के प्रति शुभकामना व्यक्त करत हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि महाविद्यालय में अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों व शिक्षकों के अन्दर ईश्वर ऐसी ऊर्जा का संचार व संवहन करें कि वे जो भी कार्य सम्पादित करें वह समाज व राष्ट्र के समक्ष एक सद् कार्य के रुप में उपस्थित हो ताकि समाज उससे हमेशा प्रेरणा ग्रहण करता रहे।

प्रो. (रामअचल सिंह)

प्रो. एन.एस.गजभिये
कुलपति
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर
विश्वविद्यालय, गोरखपुर
फोन : 0551-2201577

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है कि इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर द्वारा ''समावर्तन समारोह'' का आयोजन दिनांक 26 फरवरी, 2009 को किया जा रहा है और उपलब्धियों की एक पत्रिका 'समावर्तन' नाम से प्रकाशित की जा रही है।

विद्यार्थियों का सर्वांगींण विकास कर उसे पूर्ण मानव बनाना उच्च शिक्षा का सर्वोच्च लक्ष्य है और इस महान लक्ष्य को प्राप्त करने का बहुत बड़ा दायित्व विश्वविद्यालय के साथ-साथ हमारे महाविद्यालयों पर भी है। युवा वर्ग में नैतिकता, आत्मसंयम और अनुशासन की भावना विकसित करने की दृष्टि से उच्च शिक्षण संस्थानों का दायित्व बढ़ता जा रहा है। ज्ञान, विज्ञान तथा अनुसंधान के क्षेत्र में ऐसे युवा पीढ़ी के निर्माण की आवश्यकता है जो राष्ट्र की प्रगति एवं समाज के कल्याण के लिए अपना सर्वोत्तम योगदान कर सकें।

इस महाविद्यालय द्वारा उच्च शिक्षा के प्रचार-प्रसार से यहाँ के पिछड़े अंचल के लोगों में नव चेतना लाने का सराहनीय प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि महाविद्यालय भविष्य में प्रगति के मार्ग पर उत्तरोत्तर आगे बढ़ता रहेगा और यहाँ से दीक्षा लेकर निकलने वाले विद्यार्थी देश व विदेश में महाविद्यालय के साथ-साथ विश्वविद्यालय का भी नाम रोशन करेंगे।

मैं समावर्तन समारोह एवं प्रकाशित होने वाली पत्रिका की सफलता की हार्दिक कामना करता हूँ।

(एन0एस0 गजभिये)
कुलपति

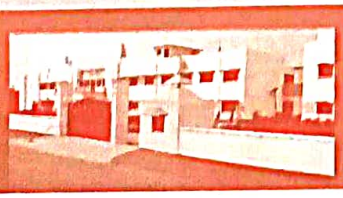

समावर्तन

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

भारत के स्वाधीनता संग्राम में बालगंगाधर तिलक का युग समाप्त होते-होते कांग्रेस के नेतृत्व पर प्रश्नचिन्ह खड़ा होने लगा था। 1920 के बाद क्रान्तिकारी आन्दोलन ने अलग राह पकड़ी और 1930-31 तक आते-आते कांग्रेस के स्पष्ट सहयोग के अभाव में क्रान्तिकारियों का दमन करने में ब्रिटिश हुकूमत सफल रही। 1915-16 के बाद के इसी काल खण्ड में स्वाधीनता संग्राम की अगुवा कांग्रेस मुस्लिम तुष्टीकरण की भी शिकार हुई। इस युग तक अंगेजों द्वारा भारत में अंग्रेजियत में रमे बाबुओं की फौज खड़ी करने की शिक्षा नीति का प्रभाव भी दिखने लगा था। देश के समक्ष एक चुनौती थी कि भारत की नयी पीढ़ी भारतीयता के साँचे में कैसे ढले। अपनी संस्कृति और स्वदेशी दृष्टि से शिक्षा प्रणाली और शिक्षा नीति ही एक मात्र इस चुनौती का समाधान था। इस चुनौती को भारतीय मनीषियों ने स्वीकार किया।

महामना मदन मोहन मालवीय के अथक प्रयास से 4 फरवरी 1916 ई0 को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय लोकार्पित हो गया। भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु स्थापित यह विश्वविद्यालय पूरे देश में भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षा पद्धति का एक मानक बना और इसी धारा को ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने आगे बढ़ाते हुए 1932 ई0 में गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की नींव रखी। ब्रिटिश हुकूमत को शिक्षा के भी क्षेत्र में भारतीय मनीषियों द्वारा यह कड़ी चुनौती थी कि भारत अपने पैरों पर खड़ा होने में समर्थ है, वह अपना तंत्र, अपनी शिक्षा, अपनी संस्कृति और अपने जीवन मूल्यों की पुन:स्थापना अपनी योजनानुसार करेगा। यह दूर-दृष्टि थी कि देश जब आजाद होगा तब तक देश की व्यवस्था चलाने हेतु भारतीय पद्धति के शिक्षा संस्थानों से निकले युवाओं की फौज तैयार मिलेगी।

देश पराधीन था। जनता विपन्न थी। ज्ञान कौशल के अभाव में स्वाभिमान और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की चेतना का जागरण दुष्कर था। ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने अपनी संकल्प शक्ति के बल पर आजादी की लड़ाई के एक प्रमुख शस्त्र के रुप में शैक्षिक क्रान्ति के पथ पर भी आगे बढ़े। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत 1932 में बक्शीपुर में किराये के एक मकान में महाराणा प्रताप क्षत्रिय स्कूल प्रारम्भ हुआ। 1935 में इसे जूनियर हाईस्कूल की मान्यता मिल गयी और 1936 में यहाँ हाईस्कूल की पढ़ाई प्रारम्भ की गयी तथा इसका नाम 'महाराणा प्रताप हाई स्कूल' हो गया। इसी बीच महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के अथक प्रयास से गोरखपुर के सिविल लाइन्स में पाँच एकड़ भूमि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् को प्राप्त हो गयी और महाराणा प्रताप हाईस्कूल का केन्द्र सिविल लाइन्स हो गया तथा देश के आजाद होते समय यह विद्यालय महाराणा प्रताप इन्टरमीडिएट कालेज के रुप में प्रतिष्ठित हुआ।

1949-50 में इसी परिसर में महाराणा प्रताप डिग्री कालेज की स्थापना महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का अगला पड़ाव था। अगस्त 1958 में ब्रह्मलीन महन्त जी ने महाराणा प्रताप डिग्री कालेज को गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु समर्पित किया और विश्वविद्यालय की स्थापना के आधार-स्तम्भ बने। वर्तमान गोरखपुर विश्वविद्यालय का वाणिज्य संकाय महाराणा प्रताप डिग्री कालेज भवन में ही चल रहा है तथा उसी परिसर में एम0बी0ए0, शिक्षा शास्त्र एवं वाणिज्य संकाय का नवीन भवन स्थित है। तत्पश्चात् महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् ने ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नाम से वर्तमान दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना की, सम्प्रति यह विश्वविद्यालय परिसर से सटे महानगर का एक अति प्रतिष्ठित महाविद्यालय है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा वर्तमान में दर्जनों शिक्षण संस्थाएँ गोरखपुर क्षेत्र में संचालित हो रही हैं। इनमें गोरखपुर महानगर में महाराणा प्रताप पालिटेक्निक, श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ, महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार एवं बालिका विद्यालय सिविल लाइन्स, दिग्विजयनाथ एल0टी0 कालेज, महाराणा प्रताप टेलरिंग कालेज सिविल लाइन्स, महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार जू0 हा0 स्कूल रमदत्तपुर, महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय रमदत्तपुर, महाराणा प्रताप कृषक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जंगल धूसड़, महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़, दिग्विजयनाथ पूर्व माध्यमिक विद्यालय चौक माफी और महाराणा प्रताप सीनियर सैकेण्ड्री प्रमुख हैं। महराजगंज जनपद में दिग्विजयनाथ इन्टर कालेज चौक बाजार, दिग्विजयनाथ शिशु शिक्षा विहार चौक बाजार, परमहंस शिशु शिक्षा सदन सोनाड़ी प्रमुख प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थाएँ हैं।

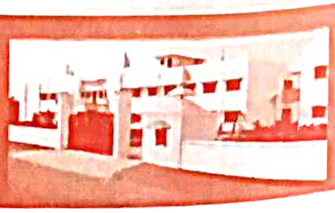

महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम – सत्र : 2008–09

महाविद्यालय का मुख्य भवन

वृक्षारोपड़ : 4 जुलाई 2008

प्राकृतिक असंतुलन की समस्या को महत्वपूर्ण मानते हुए राज्य सरकार और महाराणा प्रताप महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 4 जुलाई 2008 को महाविद्यालय परिसर में वृक्षारोपड़ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय के प्रबंधक, गोरक्षपीठ उत्तराधिकारी सदर सांसद योगी आदित्यनाथ जी महाराज तथा वन विभाग के मुख्य वन संरक्षक श्री विकास शर्मा ने वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। वन विभाग के श्री अवधेश प्रसाद त्रिपाठी, शैलेन्द चतुर्वेदी, आलोक चन्द पाण्डेय एवं महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों द्वारा परिसर में कुल 150 पौधे लगाये गये।

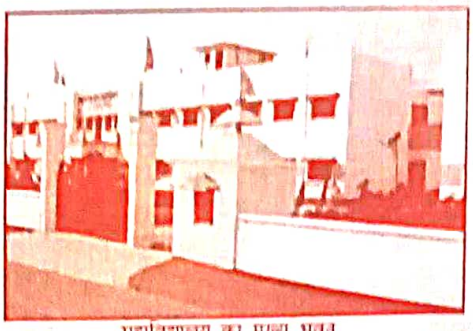

कैम्पस सलेक्शन : 12 जुलाई 2008

12 जुलाई, 2008 को महाविद्यालय परिसर में इटोन कम्पनी द्वारा कैम्पस सलेक्शन हुआ, जिसमें कुल 38 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनमें से 8 प्रतिभागियों का चयन कम्पनी द्वारा किया गया जो निम्न है–दीप कुमार चन्द, सुनील सिंह, कमलनाथ त्रिपाठी, अजय कुमार, रतन सिंह, विनीत कुमार त्रिपाठी, आकाश श्रीवास्तव, राधा स्वामी सैनी।

वृक्षारोपड़ करते योगी आदित्यनाथ जी महाराज

सत्रारम्भ : 16 जुलाई, 2008

महाविद्यालय में 16 जुलाई से बी.ए., बी.एस–सी., बी.काम. द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के कक्षाध्यापन के साथ सत्रारम्भ हुआ। प्रवेश सूची 16 जुलाई को प्रकाशित की गई।

प्रथम वर्ष की कक्षाएं आरम्भ : 1 अगस्त, 2008

17 जुलाई से 30 जुलाई तक प्रथम वर्ष में प्रवेश के पश्चात 1 अगस्त से महाविद्यालय मे बी.ए., बी.एस–सी., बी.काम. प्रथम वर्ष में कक्षाध्यापन प्रारम्भ हो गया।

भारत विभाजन की पूर्व संध्या पर व्याख्यान : 13 अगस्त, 2008

महाविद्यालय अपने स्थापना काल से भारत विभाजन की पूर्व संध्या पर व्याख्यान का आयोजन करता रहा है। इसी श्रृंखला में इस वर्ष 'भारत विभाजन : हमनें क्या सीखा' विषय पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध इतिहासकार एवं पुरातत्ववेत्ता प्रो. मक्खन लाल ने अपना उद्बोधन दिया।- कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री गुरूगोरक्षनाथ चिकित्सालय गोरखनाथ मंदिर के निदेशक ब्रिगेडियर डॉ. के.पी.बी. सिंह उपस्थित रहे। व्याख्यान की अध्यक्षता गोरक्षपीठ उत्तराधिकारी एवं संस्था के प्रबन्धक परमपूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने की। कार्यक्रम में वरिष्ठ आयकर अधिवक्ता एवं आई.टी.एम. गीडा के निदेशक श्री श्याम बिहारी अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के राजनीतिशास्त्र के प्रवक्ता डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह ने किया।

भारत विभाजन की पूर्व संध्या पर आयोजित व्याख्यान

स्वतंत्रता दिवस समारोह : 15 अगस्त, 2008

महाविद्यालय में 15 अगस्त का राष्ट्रीय पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। ध्वजारोहण एवं राट्रगान के पश्चात् छात्र–छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम सरस्वती वंदना से प्रारम्भ होकर वन्दे मातरम् के साथ सम्पन्न हुआ।

लोक कला के द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का संचार विषयक कार्यशाला : 16 से 24 अगस्त, 08

लोक कला पर दस दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन समारोह

महाविद्यालय में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राष्ट्रीय संचार परिषद द्वारा प्रोत्साहित एवं इण्डियन साइंस कम्युनिकेशन सोसाइटी तथा महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 16–24 अगस्त तक 'लोक कला के द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का संचार' विषय पर 9 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। 16 अगस्त को आयोजित कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप मे राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. रामअचल सिंह उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में ISCOS,लखनऊ के समन्वयक डॉ. वी0पी0 सिंह उपस्थित रहें। कार्यशाला की अध्यक्षता पत्रकारिता विभाग छत्रपति साहू जी विश्वविद्यालय, कानपुर के डॉ0 ए0के0 सिंह ने की तथा कार्यशाला की रूपरेखा डी0ए0वी0 कालेज कानपुर के हिन्दी विभाग के प्रवक्ता डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह ने प्रस्तुत की।

महाविद्यालय में 24 अगस्त को लोक कला के द्वारा "विज्ञान एवं प्रौद्योगिक का संचार"

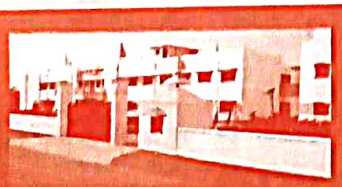

विषय पर आयोजित 9 दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न हुई। कार्यशाला के समापन सत्र को डॉ0 राजशरण शाही (बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर) ने बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित किया। विशिष्ट अतिथि रातीश द्विवेदी, (बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर) उपस्थित रहे। अध्यक्षता दूर संचार विभाग के उप महाप्रबंधक श्री विद्यानन्द ने किया। कार्यशाला में छात्र–छात्राओं द्वारा कठपुतलियों के माध्यम से "अब मैं क्या करूँ" नाटिका के माध्यम से एड्स के बारे में जानकारी दी गयी। "पर्यावरण मित्रों की रक्षा" नाटिका से तितलियों की घटती संख्या पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उनके संरक्षण पर बल दिया गया। वहीं "नीम हकीम खतरे जान" के द्वारा दिमागी बुखार के सम्बन्ध में लोगों को जागरूक किया गया। लोक कला के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं को कठपुतली निर्माण, नाटिका लेखन व कठपुतली के माध्यम से नाटिका का मंचन सिखाया गया। कार्यक्रम का संचालन कार्यशाला की सहसंयोजिका गणित विभाग की प्रवक्ता डॉ0 अलका श्रीवास्तव ने की।

लोक कला पर कार्यशाला का समापन समारोह

ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यान : 18 से 22 अगस्त, 2008

महाविद्यालय में गत वर्ष की भाँति ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं मैसूर विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन चेयर के अध्यक्ष प्रो0 आर0पी0 मिश्र ने "डेवलपमेट डिवेट एण्ड गांधी" विषय पर बतौर मुख्य अतिथि विचार व्यक्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गोरखपुर विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो0वी0के0 श्रीवास्तव ने की। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 संतोष कुमार, प्रवक्ता भौतिकी ने किया। व्याख्यान माला के संदर्भ में प्रस्ताविकी डॉ0 विजय कुमार चौधरी ने रखी।

स्मृति व्याख्यान-माला का उद्घाटन समारोह

19 अगस्त : व्याख्यान माला के दूसरे दिन मुख्य वक्ता डॉ0 वेद प्रकाश पाण्डेय, पूर्व प्राचार्य किसान पी0जी0कालेज सेवरहीं ने "उच्च शिक्षा में जीवन मूल्य" विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 प्रकाश प्रियदर्शी, प्रवक्ता समाजशास्त्र ने किया।

20 अगस्त : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के रक्षा अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो0आर0एन0 सिंह मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने "आतंकवाद समस्या एवं समाधान : तुलसी की दृष्टि में" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 आरती सिंह, प्रवक्ता हिन्दी तथा आभार ज्ञापन व्याख्यान माला के संयोजक डॉ0पी0के शाही द्वारा किया गया।

22 अगस्त : व्याख्यान माला के समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अवकाश प्राप्त न्यायाधीश श्री शम्भूनाथ श्रीवास्तव उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो0 रामअचल सिंह, पूर्व कुलपति अवध विश्वविद्यालय एवं डॉ0 विवेक निगम, यूइंग क्रिश्चियन कालेज, इलाहाबाद उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने की। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 पुरूषोत्तम पाण्डेय, प्रवक्ता अर्थशास्त्र तथा प्रस्ताविकी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 प्रदीप राव ने किया।

स्मृति व्याख्यान-माला का समापन समारोह

राज्य सरकार द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर डॉ. विजय चौधरी को 'शिक्षकश्री' सम्मान

महाविद्यालय को डॉ. मियाँजान निदेशक उच्च शिक्षा द्वारा प्रेषित पत्र से सूचना प्राप्त हुई कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक अभिवृद्धि के लिए डॉ. विजय कुमार चौधरी के योगदान को सम्मानित करने के उद्देश्य से 5 सितम्बर, 2008 शिक्षक दिवस के अवसर पर उत्तर प्रदेश शासन द्वारा 'शिक्षकश्री' सम्मान–2008 (रू. पचास हजारे) से विभूषित किया जायेगा।

'अपना व्यवसाय चुनिए' विषय पर व्याख्यान : 19 अगस्त, 2008

स्मृति व्याख्यान-माला का समापन समारोह

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के सूचना एवं सेवायोजन के प्रमुख डॉ0 कृपाशंकर शुक्ला ने व्यवसाय चुनिए पखवाड़ा के अन्तर्गत महाविद्यालय में अपना व्याख्यान दिया।

छात्र संघ चुनाव : 29 अगस्त, 2008

आज महाविद्यालय में सभी कक्षाओं के छात्र प्रतिनिधियों का चुनाव सम्पन्न कराया गया। राज्य सरकार द्वारा रोक के कारण छात्र संघ पदाधिकारियों का चुनाव नहीं कराया जा सका।

सम्मान समारोह : 6 सितम्बर, 2008

राज्य सरकार द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों को

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

सम्मानित करने की योजना के तहत महाविद्यालय के भूगोल विभाग के प्रभारी डॉ0 विजय कुमार चौधरी को 'शिक्षकश्री' सम्मान से सम्मानित किये जाने के अवसर पर महाविद्यालय के समस्त शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने मिलकर एक सम्मान समारोह का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह ने की।

''शिक्षक श्री'' सम्मान प्रदान करते शिक्षा मंत्री

गोरक्षपीठाधीश्वर द्वारा डॉ0 चौधरी को सम्मान :

उत्तर प्रदेश सरकार के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक का 'शिक्षकश्री' सम्मान प्राप्त महाविद्यालय के भूगोल विभाग के प्रभारी डॉ0 विजय कुमार चौधरी को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा आयोजित19 सितम्बर 2008 को महन्त दिग्विजयनाथ श्रद्धांजलि समारोह में गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर डॉ0 विजय कुमार चौधरी ने सम्मान के साथ राज्य सरकार से प्राप्त पचास हजार रूपये में पचीस हजार रूपये का चेक महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के माध्यम से महाविद्यालय को प्रदान किया।

शिक्षक अभिभावक बैठक : 2 अक्टूबर, 2008

महाविद्यालय में 2 अक्टूबर, 2008 को शिक्षक अभिभावक बैठक सम्पन्न हुयी। बैठक में वर्तमान सत्र का कार्यवृत्त रख गया। अभिभवकों ने अपने विचार प्रस्तुत किये एवं सुझाव दिये।

डॉ. विजय चौधरी को सम्मानित करते गोरक्षपीठाधीश्वर

राष्ट्रीय सेवा योजना का एक दिवसीय शिविर : 1 नवम्बर, 2008

राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रथम एक दिवसीय शिविर में स्वयंसेवक एवं स्वयं सेविकाओं द्वारा अभिगृहीत ग्राम मंझरियां में नाटक मंचन किया गया तथा स्वच्छता, शिक्षा, सामाजिक सहभाग के प्रति जागरूकता अभियान चलाया गया।

उच्च शिक्षा पर कार्यशाला : 9 नवम्बर, 2008

महाविद्यालय व गुआक्टा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'उच्च शिक्षा की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएं'' विषयक एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी। कार्यशला में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. राधेमोहन मिश्र, उच्च शिक्षा सेवा चयन बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष एवं अवध विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 रामअचल सिंह, पूर्व कुलपति प्रो. आद्या प्रसाद मिश्र, प्रो. रामकृष्ण मणि त्रिपाठी, पूर्व प्राचार्य डॉ. सूर्यपाल सिंह, डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, प्रो. सदानन्द गुप्त, डॉ. हिमांशु चतुर्वेदी, डॉ. हर्ष कुमार सिन्हा सहित चार दर्जन से अधिक विद्वानों ने भाग लिया। कार्यशाला का संचालन गुआक्टा के उपाध्यक्ष डॉ. श्रीभगवान सिंह व आभार ज्ञापन गुआक्टा के अध्यक्ष डॉ. कृपा शंकर सिंह ने व्यक्त किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम : 25 नवम्बर – 3 दिसम्बर, 2008

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 25 नवम्बर से 3 दिसम्बर के मध्य महाविद्यालय में विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की संयोजिका डॉ0 कविता मन्ध्यान की देख–रेख में कार्यक्रम सपम्न हुए। 25 नवम्बर को प्रश्नमंच प्रतियोगिता , 26 नवम्बर को गायन प्रतियोगिता, 27 नम्बर को रंगोली प्रतियोगिता,28 नवम्बर को हास्य व्यंग्य प्रतियोगिता, 29 नवम्बर को पाक कला प्रतियोगिता , 2 दिसम्बर को मेंहदी प्रतियोगिता तथा 3 दिसम्बर को फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता सम्पन्न हुयी। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र दिया गया।

शोभा यात्रा में महाविद्यालय के छात्र

शोभा यात्रा में महाविद्यालय की छात्राएँ

शोभा यात्रा : 4 दिसम्बर, 2008

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक समारोह के उद्घाटन समारोह में निकाली जाने वाली शोभा यात्रा में महाविद्यालय के सभी छात्र–छात्रांओं, प्राध्यापक एवं कर्मचारियों ने सक्रिय भूमिका निभायी।

मुख्य समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह : 10 दिसम्बर, 2008 (महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद)

संस्थापक समारोह में होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने अनेक पुरस्कार प्राप्त किये। जिसमें शोभा यात्रा में श्रेष्ठ अनुशासन के लिए महाविद्यालय को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

राष्ट्रीय सेवा योजना का एक दिवसीय शिविर : 12 दिसम्बर, 2008

राष्ट्रीय सेवा योजना के दूसरे एक दिवसीय शिविर में स्वयंसेवक एवं स्वयं सेविकाओं द्वारा अभिगृहीत ग्राम मंझरिया में जन जागरूकता रैली का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना एक दिवसीय शिविर : 14 दिसम्बर, 2008

राष्ट्रीय सेवा योजना के तीसरे एक दिवसीय शिविर में स्वयंसेवक एवं स्वयं सेविकाओं द्वारा महाविद्यालय परिसर एवम् समस्त व्याख्यान कक्षों की सफाई की गयी।

श्रद्धांजलि सभा : 23 दिसम्बर, 2008

महाविद्यालय के बी.ए. तृतीय वर्ष के छात्र रोमी चौधरी तथा बी.ए. उत्तीर्ण कर चुके कमलेश चौधरी की मार्ग दुर्घटना में असामयिक मृत्यु हो जाने पर महाविद्यालय ने श्रद्धांजलि सभा कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

उच्च शिक्षा पर कार्यशाला

श्रद्धांजलि सभा : 5 जनवरी, 2009

महाविद्यालय में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 रामचन्द्र तिवारी के निधन पर 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गयी।

जलवायु परिवर्तन पर व्याख्यान

उड़न तश्तरियों का अस्तित्व विषयक व्याख्यान : 8 जनवरी, 2009

'उड़न तश्तरियों का अस्तित्वःकितना सच–कितना झूठ' विषय पर आई0आई0टी0 कानपुर के परियोजना वैज्ञानिक डॉ. सत्यपाल सिंह का व्याख्यान हुआ। जिसका संचालन भौतिकी विभाग के प्रभारी डॉ0 संतोष कुमार ने किया।

जलवायु परिवर्तन विषयक व्याख्यान : 9 जनवरी, 2009

दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि.गोरखपुर के भूगोल विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 शिवशंकर वर्मा का जलवायु परिवर्तन विषय पर शोधपूर्ण व्याख्यान हुआ।जिसका संचालन अर्थशास्त्र के प्रवक्ता डा. पुरूषोत्तम पाण्डेय ने किया।

15वीं यू0पी0 गर्ल्स बटालियन का शिविर : 10से 21 जनवरी, 2009

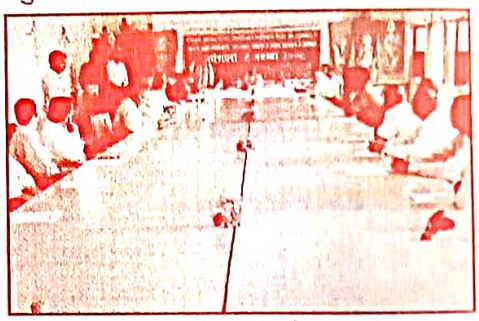
उच्च शिक्षा पर कार्यशाला

10 जनवरी से 21 जनवरी तक महाविद्यालय में 15वीं यू0पी0 गर्ल्स बटालियन का दस दिवसीय शिविर आयोजित हुआ। जिसके समापन समारोह के मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्रबंधक एवं मंत्री पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज रहे। कर्नल वी.पी. शाही एवं ले. कर्नल कुलजीत सिंह की गरिमामयी उपस्थिति में शिविर सम्पन्न हुआ।

राष्ट्रीय सेवा योजना का एक दिवसीय शिविर : 13 जनवरी, 2009

राष्ट्रीय सेवा योजना के चौथे एक दिवसीय शिविर में स्वयं सेवक एवं स्वयं सेविकाओं द्वारा मंझरिया गांव में जन सम्पर्क कर ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं की जानकारी दी गई।

उच्च शिक्षा पर कार्यशाला

सिविल सर्विसेज शिक्षण शिविर : 22 से 25 जनवरी, 2009

सिविल सर्विसेज के सामान्य अध्ययन की निःशुल्क कक्षाएं 22 जनवरी से 25 जनवरी तक सृष्टि–आई.ए.एस., नई दिल्ली के निदेशक श्री राजू सिंह के सहयोग से चलाई गयी।

गणतंत्र दिवस व शिक्षक अभिभावक बैठक : 26 जनवरी, 2009

ध्वजारोहण व सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समारोह पूर्वक गणतंत्र दिवस मनाया गया। तत्पश्चात् पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम के अनुसार महाविद्यालय में शिक्षक अभिभावक बैठक सम्पन्न हुई।

शैक्षिक यात्रा : 26 जनवरी से 4 फरवरी, 2009

महाविद्यालय के भूगोल विभाग द्वारा स्नातक भाग तीन के छात्रों की पर्यटन यात्रा गोरखपुर से 26 जनवरी, 2009 को प्रारम्भ हुई। 27 जनवरी, 09 को सभी छात्र हरिद्वार पहुँचे। हरिद्वार एवं ऋषिकेश के विभिन्न धार्मिक एवं भौगोलिक महत्व के स्थलों का अवलोकन करने के बाद देव प्रयाग, अलकनन्दा व भागीरथी नदियों के संगम को देखने गये। ये नदियाँ मिलकर गंगा नदी के नाम से ऋषिकेश की तरफ प्रवाहित होती हैं। 1 फरवरी को भौगोलिक यात्रा दल ने हरिद्वार से देहरादून के लिए प्रस्थान किया। देहरादून से मसूरी, कैम्टीफाल, सहस्त्र धारा, एफ0आर0आई0 आदि स्थलों के भ्रमण के पश्चात यह दल 3 फरवरी को देहरादून से यात्रा आरम्भ कर 4 फरवरी को गोरखपुर पहुँचा।

समावर्तन

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

राष्ट्रीय सेवा योजना का सात दिवसीय विशेष शिविर : 23–29 जनवरी, 09

रा.से.यो.के विशेष शिविर का उद्घाटन समारोह

महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन जंगल धूसड़ के रेतवहिया टोले में हुआ। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में रंजीत गुप्ता, समन्वयक राष्ट्रीय सेवा योजना, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर तथा अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रबंधक तथा गोरक्षपीठ के उत्तराधिकारी परमपूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज जी ने किया। समारोह वन्देमातरम् के साथ सम्पन्न हुआ। संचालन कार्यक्रम अधिकारी डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह तथा आभार कार्यक्रम अधिकारी डॉ0 लोकेश प्रजापति ने व्यक्त किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य एवं प्राध्यापकों सहित गांव के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे। समापन समारोह स्वयं सेवक एवं सेविकाओं द्वारा आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ।

पूर्व विश्वविद्यालय परीक्षा : 5 से 19 फरवरी 2009

रा.से.यो.के विशेष शिविर का उद्घाटन समारोह

महाविद्यालय में 5 फरवरी से 19 फरवरी तक पूर्व विश्वविद्यालय परीक्षा डॉ0 आर0एन0 सिंह, परीक्षा नियंत्रक के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुई।

पूर्व विश्वविद्यालय परीक्षा परिणाम : 24 फरवरी, 2009

24 फरवरी को पूर्व विश्वविद्यालय परीक्षा बी0ए0, बी0एस–सी0, बी0काम0 के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के परीक्षा परिणाम घोषित किये गये।

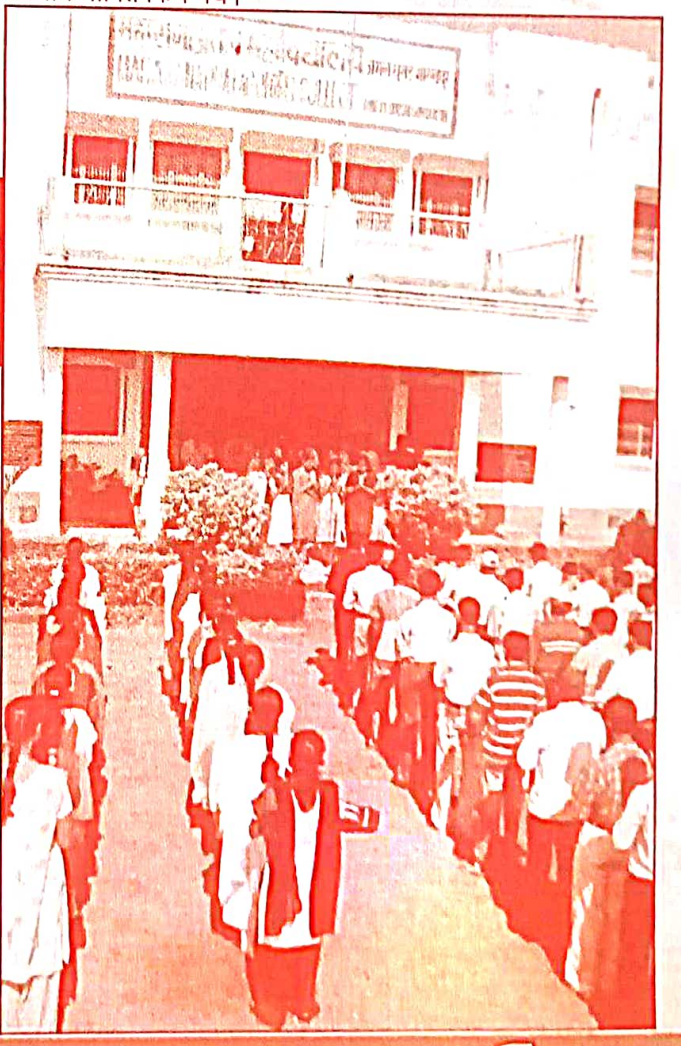

समावर्तन संस्कार समारोह : 26 फरवरी, 2009

पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज के सानिध्य में समावर्तन संस्कार समारोह 26 फरवरी, 2009 को होना सुनिश्चित हुआ है। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री गिरधर मालवीय जी होगें एवं अध्यक्षता कुलपति प्रो. एन.एस. गजभिये करेगें।

समावर्तन 2007

व्याख्यान-माला 2007

समावर्तन

प्रवेश समिति

संयोजक - डॉ. अविनाश प्रताप सिंह (प्राध्यापक)
सदस्य - डॉ. कृष्णदेव पाण्डेय (प्राध्यापक)
डॉ. शालिनी सिंह (प्राध्यापक)
श्री पुरूषोत्तम पाण्डेय (प्राध्यापक)

प्रवेश परामर्श समिति

प्रतीक कुमार दास, स्नातक विज्ञान प्रथम वर्ष
अशोक सिंह, स्नातक विज्ञान द्वितीय वर्ष
सुनील सिंह, स्नातक विज्ञान तृतीय वर्ष
वागीश राज पाण्डेय, स्नातक विज्ञान प्रथम वर्ष
नीतू दूबे, स्नातक विज्ञान द्वितीय वर्ष
आशुतोष कुमार श्रीवास्तव, स्नातक विज्ञान तृतीय वर्ष
शीतल प्रजापति, स्नातक कला प्रथम वर्ष
शमा अफरोज, स्नातक कला द्वितीय वर्ष
रत्ना तिवारी, स्नातक कला तृतीय वर्ष
शिव प्रकाश शुक्ल, वाणिज्य प्रथम वर्ष
रणजीत कुमार सेठ, वाणिज्य द्वितीय वर्ष
अजय गुप्ता, वाणिज्य तृतीय वर्ष

(प्रवेश परामर्श समितिं में उन छात्र-छात्राओं को चयनित किया जाता है जो पूर्व विश्वविद्यालय परीक्षा में अपने वर्ग में सर्वोच्च अंक प्राप्त करते हैं।)

नियन्ता मण्डल

डॉ. शिवकुमार बर्नवाल, मुख्यनियन्ता
डॉ. विजय कुमार चौधरी, नियन्ता
डॉ. रघुबीर नारायण सिंह, नियन्ता
डॉ. लोकेश कुमार प्रजापति, नियन्ता
डॉ. पुरूषोत्तम पाण्डेय, नियन्ता
डॉ. प्रवीन्द्र कुमार शाही, नियन्ता
डॉ. श्रीप्रकाश प्रियदर्शी, नियन्ता
डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव, नियन्ता

छात्र नियन्ता मण्डल

श्री अशोक सिंह, बी.एस-सी. भाग-तीन
कु. रेनू सिंह, बी.एस-सी. भाग-तीन
श्री वागीश राज पाण्डेय, बी.एस-सी. भाग-दो
कु. शीतल प्रजापति, बी.ए. भाग-दो
श्री हरेन्द्र सिंह, बी.काम. भाग-एक

सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति

प्रभारी - श्रीमती कविता मन्ध्यान
सदस्य - दीपक कुमार, स्नातक विज्ञान तृतीय वर्ष
अभिषेक सिंह, स्नातक कला द्वितीय वर्ष
हरेन्द्र सिंह, स्नातक वाणिज्य प्रथम वर्ष
प्रदीप पाण्डेय, स्नातक विज्ञान प्रथम वर्ष
शीलत प्रजापति, स्नातक कला द्वितीय वर्ष
सपना पाण्डेय, स्नातक कला प्रथम वर्ष
कु० सोनम, स्नातक कला प्रथम वर्ष
मुन्नी बर्नवाल, स्नातक कला प्रथम वर्ष

स्वच्छता समिति

प्रभारी - डॉ. अविनाश प्रताप सिंह
सदस्य - दीपक कुमार स्नातक विज्ञान तृतीय वर्ष
राजीव पाण्डेय, स्नातक कला द्वितीय वर्ष
प्रदीप पाण्डेय, स्नातक विज्ञान प्रथम वर्ष
अभिषेक सिंह, स्नातक कला द्वितीय वर्ष

पुस्तकालय समिति

प्रभारी- डॉ. लोकेश प्रजापति
सदस्य- प्रतीक कुमार दास, स्नातक विज्ञान द्वितीय वर्ष
योगेन्द्र कुमार यादव, स्नातक कला द्वितीय वर्ष
सत्यानन्द पाण्डेय, स्नातक विज्ञान प्रथम वर्ष

बागवानी समिति

प्रभारी - डॉ. प्रदीप राव/डॉ. विजय कुमार चौधरी
सदस्य - राजीव पाण्डेय, स्नातक कला द्वितीय वर्ष
ज्योत्सना सिंह, स्नातक वाणिज्य प्रथम वर्ष
सपना पाण्डेय, स्नातक कला प्रथम वर्ष
रवि कुमार शर्मा, स्नातक विज्ञान प्रथम वर्ष

खेल समिति

प्रभारी - डॉ. प्रवीन्द्र शाही
सदस्य - राज पाण्डेय, स्नातक कला तृतीय वर्ष
ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, स्नातक कला प्रथम वर्ष
अजय कुमार, स्नातक विज्ञान प्रथम वर्ष
संदीप पाण्डेय, स्नातक विज्ञान द्वितीय वर्ष

समावर्तन

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

प्रबन्ध समिति

अध्यक्ष	-	महन्त अवेद्यनाथ, गोरक्षपीठाधीश्वर
उपाध्यक्ष	-	प्रो. यू.पी. सिंह, पूर्व कुलपति
प्रबन्धक/सचिव	-	योगी आदित्यनाथ, सांसद लोकसभा
सदस्य	-	प्रमोद चौधरी, प्रतिष्ठित व्यवसायी
	-	धर्मेन्द्रनाथ वर्मा, अधिवक्ता
	-	पारसनाथ मिश्रा, अधिवक्ता
	-	प्यारे मोहन सरकार, अधिवक्ता
	-	गोरक्ष प्रताप सिंह, निदेशक, जी.एन.पब्लिक स्कूल
	-	योगी कमलनाथ, धर्माचार्य
	-	रामजन्म सिंह, प्रधानाचार्य

शिक्षक - अभिभावक समिति

सत्र २००८-२००९

अध्यक्ष	-	श्री सुखराज, अभिभावक
मंत्री	-	श्री दीप नारायण त्रिपाठी, प्राध्यापक
सदस्य	-	श्री सरोज रंजन शुक्ला, अभिभावक
		श्री गब्बू प्रसाद, अभिभावक
		श्री संजय कुमार शाह, अभिभावक
		श्री रामलखन चक्रधारी, अभिभावक
		श्री रामप्रकाश, अभिभावक
		श्री अवधेश कुमार दूबे, अभिभावक
		श्री छोटे लाल सिंह, अभिभावक
		श्री सुदर्शन गौड़, अभिभावक
		श्री शंकर शरन त्रिपाठी, अभिभावक
		श्री तारकेश्वर प्रसाद, अभिभावक
		श्री नवरत्न सिंह, अभिभावक

पुरातन छात्र परिषद

कु. बबिता सिंह (पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष), श्री दीपेन्द्र प्रताप सिंह (पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष), श्री आशीष कुमार श्रीवास्तव (पूर्व छात्र महामंत्री), कु. प्रियंका शाही (पूर्व छात्र संघ प्रतिनिधि), श्री आशुतोष कुमार श्रीवास्तव (पूर्व छात्र संघ प्रतिनिधि), कु. जैस्मिन चौधरी (पूर्व छात्र संघ प्रतिनिधि), कु. रतन सिंह (पूर्व छात्र संघ प्रतिनिधि), श्री विवेक श्रीवास्तव (पूर्व छात्र संघ प्रतिनिधि), श्री अभिषेक तिवारी (पूर्व छात्र संघ उपाध्यक्ष), श्री सुबोध कुमार श्रीवास्तव (पूर्व छात्र संघ प्रतिनिधि), श्री गौरव राज सिंह (पूर्व छात्र संघ प्रतिनिधि),

छात्रसंघ संचालन समिति

दीपक कुमार	बी.एस-सी. तृतीय वर्ष
राज पाण्डेय	बी.ए. तृतीय वर्ष
स्वाति गुप्ता	बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष

छात्रसंघ के प्रतिनिधि

दिनेश कुमार	बी.एस-सी.	प्रथम वर्ष
सत्यानन्द पाण्डेय	बी.एस-सी.	प्रथम वर्ष
रवि कुमार शर्मा	बी.एस-सी.	प्रथम वर्ष
अजय कुमार	बी.एस-सी.	प्रथम वर्ष
प्रदीप पाण्डेय	बी.एस-सी.	प्रथम वर्ष
रत्नेश सिंह	बी.एस-सी.	द्वितीय वर्ष
वागीश राज पाण्डेय	बी.एस-सी.	द्वितीय वर्ष
प्रतीक कुमार दास	बी.एस-सी.	द्वितीय वर्ष
संदीप पाण्डेय	बी.एस-सी.	द्वितीय वर्ष
स्वाति गुप्ता	बी.एस-सी.	द्वितीय वर्ष
अशोक सिंह	बी.एस-सी.	तृतीय वर्ष
विवेक कुमार श्रीवास्तव	बी.एस-सी.	तृतीय वर्ष
नीतू दुबे	बी.एस-सी.	तृतीय वर्ष
दीपक कुमार	बी.एस-सी.	तृतीय वर्ष
अजय कुमार चौधरी	बी.ए.	प्रथम वर्ष
वरूण शंकर द्विवेदी	बी.ए.	प्रथम वर्ष
ऋषभ देव व्यास शर्मा	बी.ए.	प्रथम वर्ष
मो. अयूब	बी.ए.	प्रथम वर्ष
मुन्नी बर्नवाल	बी.ए.	प्रथम वर्ष
सपना पाण्डेय	बी.ए.	प्रथम वर्ष
ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह	बी.ए.	प्रथम वर्ष
कु० सोनम	बी.ए.	प्रथम वर्ष
शीतल प्रजापति	बी.ए.	द्वितीय वर्ष
अभिषेक कुमार शुक्ल	बी.ए.	द्वितीय वर्ष
प्रियंका श्रीवास्तव	बी.ए.	द्वितीय वर्ष
सुजीत कुमार कर्ण	बी.ए.	द्वितीय वर्ष
प्रमोद कुमार	बी.ए.	द्वितीय वर्ष
योगेन्द्र कुमार यादव	बी.ए.	द्वितीय वर्ष
राजीव पाण्डेय	बी.ए.	द्वितीय वर्ष
अभिषेक सिंह	बी.ए.	द्वितीय वर्ष
राज पाण्डेय	बी.ए.	तृतीय वर्ष
कृतेश कुमार कनौजिया	बी.ए.	तृतीय वर्ष
कु. पूनम	बी.ए.	तृतीय वर्ष
सुमित कुमार पाण्डेय	बी.ए.	तृतीय वर्ष
हरेन्द्र सिंह	बी.काम.	प्रथम वर्ष
ज्योत्सना सिंह	बी.काम.	प्रथम वर्ष

छात्र संघ पदाधिकरियों का चुनाव राज्य सरकार अध्यादेश के कारण न हो सका

समावर्तन

महाविद्यालय परिवार

डॉ० प्रदीप राव
प्राचार्य

प्राध्यापक

डॉ. विजय कुमार चौधरी	प्रभारी	भूगोल विभाग, प्रभारी छात्र संघ
डॉ. रघुबीर नारायण सिंह	प्रभारी	प्राणि विज्ञान, परीक्षा नियंत्रक
डॉ. स्नेहलता त्रिपाठी	प्रभारी	वनस्पति विज्ञान विभाग, प्रभारी विज्ञान संकाय
डॉ. शिवकुमार बर्नवाल	प्रभारी	रसायन शास्त्र विभाग, मुख्य नियंता
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	प्रभारी	राजनीतिशास्त्र विभाग, राष्ट्रीय सेवा योजना
डॉ. अलका श्रीवास्तव	प्रभारी	गणित विभाग, प्रभारी प्रार्थना एवं राष्ट्र गौरव
डॉ. कृष्ण देव पाण्डेय	प्रभारी	वाणिज्य, प्रभारी कला एवं वाणिज्य संकाय
डॉ. शालिनी सिंह	प्रवक्ता	रसायन शास्त्र, प्रभारी छात्रा
डॉ. लोकेश कुमार प्रजापति	प्रभारी	प्राचीन इतिहास,प्रभारी पुस्तकालय
डॉ. कविता मन्ध्यान	प्रभारी	अंग्रेजी विभाग, प्रभारी सांस्कृतिक कार्यक्रम
डॉ. पुरूषोत्तम पाण्डेय	प्रभारी	अर्थशास्त्र विभाग, प्रभारी छात्रावास
डॉ. संतोष कुमार	प्रभारी	भौतिक विज्ञान विभाग, प्रभारी कार्यालय
डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	प्रवक्ता	वनस्पति विज्ञान, प्रभारी प्रयोगशाला
डॉ. प्रवीन्द्र कुमार शाही	प्रवक्ता	भूगोल विभाग,प्रभारी खेल
डॉ. प्रकाश प्रियदर्शी	प्रभारी	समाजशास्त्र, सूचना एवं जनसम्पर्क
डॉ. राजेश शुक्ला	प्रवक्ता	वाणिज्य विभाग,
डॉ. सत्यप्रकाश सिंह	प्रवक्ता	प्राणि विज्ञान विभाग
डॉ. आरती सिंह	प्रभारी	हिन्दी विभाग
डॉ. दीप नारायण त्रिपाठी	प्रवक्ता	रसायनशास्त्र, प्रभारी शिक्षक-अभिभावक समिति
डॉ. स्वतंत्र नारायण त्रिपाठी	प्रवक्ता	गणित
डॉ. गरिमा सिंह	प्रवक्ता	भौतिकी

सहायक ग्रन्थालयी

श्री संजय कुमार मल्ल

तृतीय श्रेणी कर्मचारी

श्री ऋषि कुमार गौतम, कार्यालय प्रमुख
श्री विकास शुक्ल, कार्यालय सहायक
श्री बृजेश सिंह, प्रयोगशाला सहायक प्राणि विज्ञान विभाग
श्री सुभाष कुमार, प्रयोगशाला सहायक भूगोल विभाग
श्री संतोष कुमार, प्रयोगशाला सहायक भौतिक विज्ञान
संजय कुमार, कम्प्यूटर आपरेटर
श्री प्रदीप यादव, प्रयोगशाला सहायक वनस्पति विज्ञान विभाग

चतुर्थ श्रेणी

श्री रामरतन, परिचर,
श्री विश्वनाथ, परिचर,
श्री ओम प्रकाश परिचर,
श्री हीरालाल परिचर,
श्री धर्मवीर माली

समावर्तन

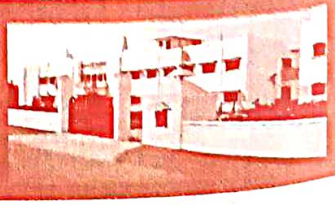

हमारे प्रयास

- प्रातः प्रार्थना एवं वन्देमारतम् के साथ महाविद्यालय की दिनचर्या प्रारम्भ।
- 16 जुलाई से स्नातक द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ।
- 1 अगस्त से स्नातक प्रथम वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ।
- 16 अगस्त से प्रयोगशालाएं शुरू।
- छात्रसंघ का चुनाव 31 अगस्त तक।
- प्रवेश समिति में छात्र–छात्राएँ सदस्य एवं संयोजक।
- छात्र, छात्राओं, प्राध्यापक, कर्मचारी आदि द्वारा प्रत्येक सोम... श्रमदान।
- सप्ताह में एक दिन छात्र–छात्राओं द्वारा कक्षाध्यापन।
- छात्र–छात्राओं का मासिक मूल्यांकन।
- महाविद्यालय प्रशासन में छात्र सहभाग अर्थात् नियन्ता मण्डल, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि समितियों में छात्र सदस्य।
- प्रत्येक शनिवार एवं कार्यक्रमों में गणवेश निर्धारित।
- छात्र–छात्राओं द्वारा शिक्षकों का मूल्यांकन,शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र द्वारा।
- मकर संक्रान्ति तक पाठ्यक्रम पूर्ण।
- विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा।
- विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा में प्रथम पाँच छात्र–छात्राओं को पुस्तक... सुविधा, प्रवेश समिति की सदस्यता, उनकी उत्तर पुस्तिकाएं पुस्तकालय में अवलोकनार्थ ...
- शिक्षकों द्वारा छात्र–छात्राओं को गोद लेने की प्रक्रिया।
- 2 अक्टूबर एवं 26 जनवरी को अभिभावक बैठक।
- प्रतिवर्ष अगस्त माह में साप्ताहिक दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यान माला।
- नवम्बर माह में शोध व्याख्यान प्रतियागिता।
- प्रतिवर्ष विमर्श नामक शोधपत्रिका का प्रकाशन

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

जंगल धूसड़ - गोरखपुर

समावर्तन २००६

आग्रह

सत्यं वद । धर्मं चर । स्वाध्यायान्मा प्रमदः । आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः । सत्यान्न प्रमदितव्यम् । धर्मान्न प्रमदितव्यम् । भूत्यै न प्रमदितव्यम् । स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् । देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम् । मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव । अतिथिदेवो [illegible]न्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि ।   तैत्तिरीय उपनिषद्

"सत्य बोलना । धर्म का आचरण करना । स्वाध्याय में प्रमाद न करना । आचार्य की दक्षिणा दे लेने पर संतति-उत्पादन की परम्परा विच्छिन्न न करना । सत्य से न हटना । धर्म से न हटना । लाभ कार्य में प्रमाद न करना । महान बनने के सुअवसर से न चूकना । पठन-पाठन के कर्तव्य में प्रमाद न करना । देवता और पितरों के कार्य (यज्ञ और श्राद्ध आदि) से प्रमाद न करना । माता को देवी समझना । पिता को देवता समझना। आचार्य को देवता समझना । अतिथि को देवता समझना । अन्यान्य दोष-रहित कर्मों को करना ।"

संकल्प

मैं .... पुत्र/पुत्री श्री ....

स्नातक कला/विज्ञान/वाणिज्य में इस महाविद्यालय से अपनी शिक्षा पूर्ण कर रहा/रही हूँ ।

- मैं संकल्प लेता/लेती हूँ कि उपरोक्त 'आग्रह' का पालन करूँगा/करूँगी ।
- जीवन में शुचिता एवं ईमानदारी के साथ पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन का निर्वाह करूँगा/करूँगी ।
- मैं भारत का एक योग्य नागरिक बना रहूँगा/बनी रहूँगी ।
- सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति मेरी निष्ठा रहेगी।
- मैं कभी कोई ऐसा कार्य नहीं करूँगा/करूँगी जिससे राष्ट्रीय एकता-अखण्डता को चोट पहुँचे ।
- भारत की सनातन संस्कृति में मेरी अटूट निष्ठा बनी रहेगी ।
- भारतीय जीवन मूल्यों का सम्मान करते हुए उसके संवर्धन हेतु सदैव प्रयत्नशील रहूँगा/रहूँगी और अपने व्यक्तिगत जीवन में उनका पालन करूँगा/करूँगी।

साक्षी , प्राचार्य

हस्ताक्षर